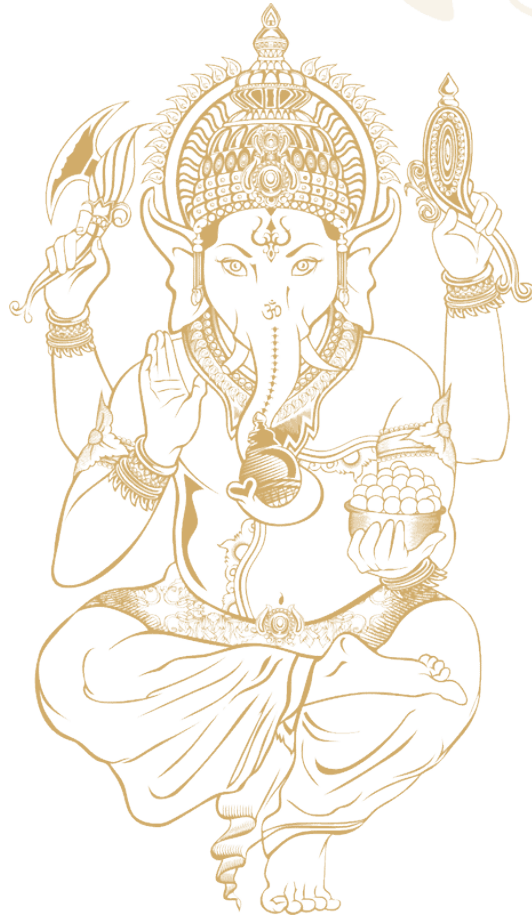




Sneh Agrawal

17 Feb 2001

05:50 PM

Bargarh

Model: Web-MyKundli

Order No: 119826901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 17/02/2001
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 17:50:00 घंटे
इष्ट _____: 28:30:42 घटी
स्थान _____: Bargarh
राज्य _____: Odisha
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:38:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:33:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:04:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 17:54:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:14:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 03:44:23 घंटे
सूर्योदय _____: 06:25:43 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:54:10 घंटे
दिनमान _____: 11:28:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 05:02:00 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 04:52:44 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: मूल - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: वज्र
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ये-येनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1922	माघ	28
पंजाबी	संवत : 2057	फाल्गुन	6
बंगाली	सन् : 1407	फाल्गुन	5
तमिल	संवत : 2057	मासी	5
केरल	कोल्लम : 1176	कुंभम	5
नेपाली	संवत : 2057	फाल्गुन	6
चैत्रादि	संवत : 2057	फाल्गुन	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2057	माघ	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति काल _____: 24:51:55
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:11:55 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग _____: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 17:29:22 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 11:45:47 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 09:05:13
भभोग _____: 67:00:52
भोग्य दशा काल _____: केतु 6 वर्ष 0 मा 16 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैत्तिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

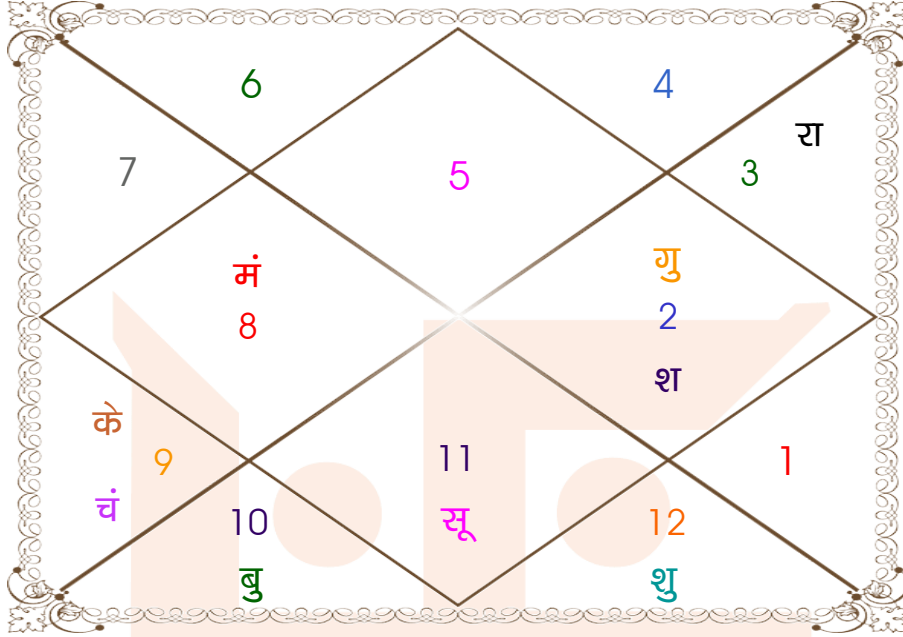
D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

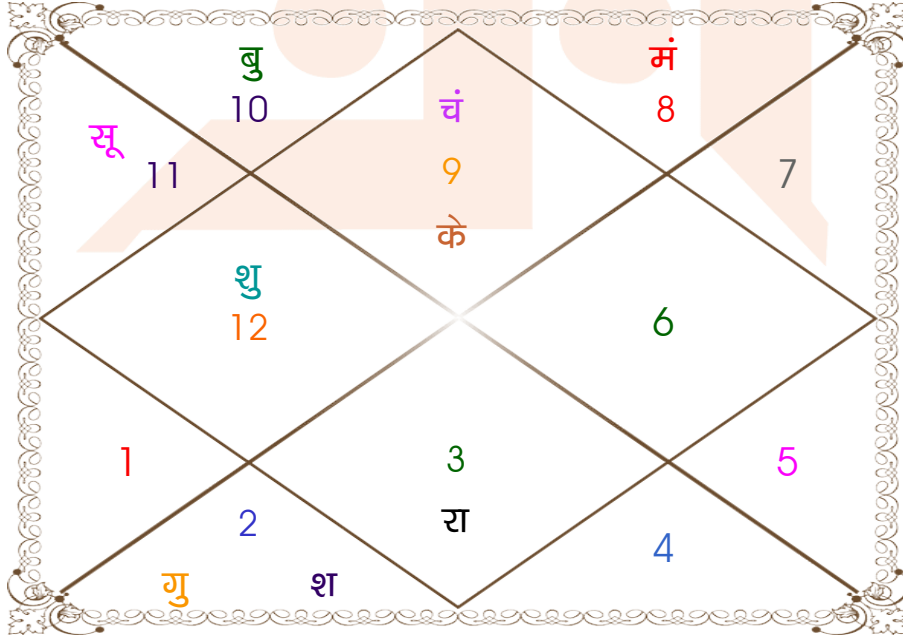
Vibhaasharma.av@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु		श गु	रा
सू			
बु			ल
के चं	मं		

लग्न कुंडली

श गु		शु
रा		सू
		बु
ल		चं के
	मं	

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 0मा 16दि
केतु

17/02/2001

06/03/2120

केतु	06/03/2007
शुक्र	06/03/2027
सूर्य	06/03/2033
चन्द्र	06/03/2043
मंगल	06/03/2050
राहु	05/03/2068
गुरु	05/03/2084
शनि	07/03/2103
बुध	06/03/2120

योगिनी
उल्का 5वर्ष 2मा 5दि
धान्या

24/04/2024

25/04/2027

धान्या	24/07/2024
भ्रामरी	23/11/2024
भद्रिका	24/04/2025
उल्का	24/10/2025
सिद्धा	25/05/2026
संकटा	24/01/2027
मंगला	23/02/2027
पिंगला	25/04/2027

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

6

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 19:48:39	सिंह 04:52:44
2	सिंह 19:48:39	कन्या 04:44:33
3	कन्या 19:40:28	तुला 04:36:23
4	तुला 19:32:18	वृश्चिक 04:28:12
5	वृश्चिक 19:32:18	धनु 04:36:23
6	धनु 19:40:28	मकर 04:44:33
7	मकर 19:48:39	कुम्भ 04:52:44
8	कुम्भ 19:48:39	मीन 04:44:33
9	मीन 19:40:28	मेष 04:36:23
10	मेष 19:32:18	वृष 04:28:12
11	वृष 19:32:18	मिथुन 04:36:23
12	मिथुन 19:40:28	कर्क 04:44:33

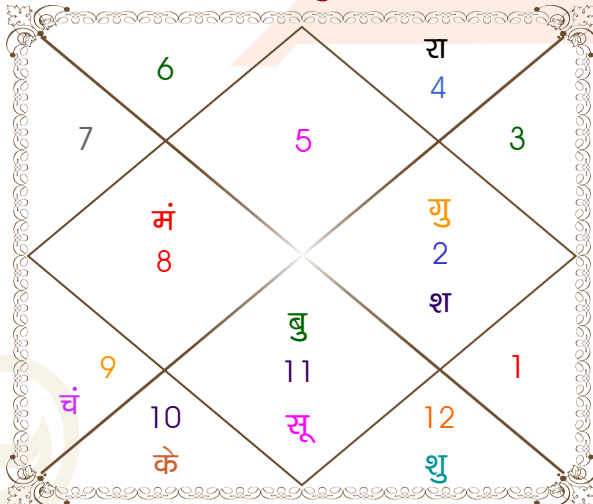
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	04:52:44
2	कन्या	02:18:41
3	तुला	02:46:35
4	वृश्चिक	04:28:12
5	धनु	05:34:29
6	मकर	05:40:13
7	कुम्भ	04:52:44
8	मीन	02:18:41
9	मेष	02:46:35
10	वृष	04:28:12
11	मिथुन	05:34:29
12	कर्क	05:40:13

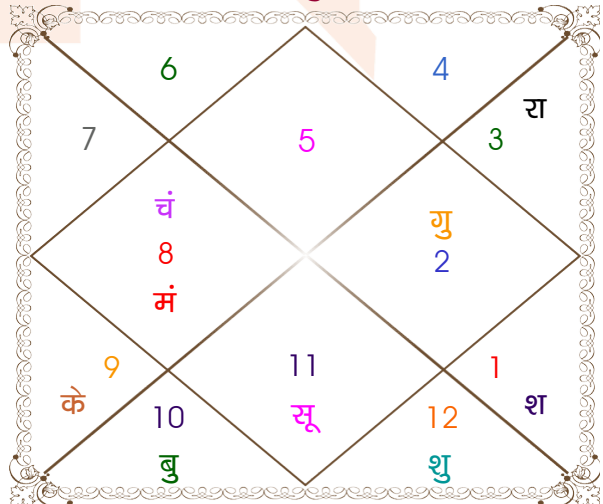
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 0 मास 16 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
17/02/2001	06/03/2007	06/03/2027	06/03/2033	06/03/2043
06/03/2007	06/03/2027	06/03/2033	06/03/2043	06/03/2050
17/02/2001	शुक्र 06/07/2010	सूर्य 24/06/2027	चंद्र 04/01/2034	मंगल 02/08/2043
शुक्र 02/10/2001	सूर्य 06/07/2011	चंद्र 23/12/2027	मंगल 05/08/2034	राहु 20/08/2044
सूर्य 06/02/2002	चंद्र 06/03/2013	मंगल 29/04/2028	राहु 04/02/2036	गुरु 27/07/2045
चंद्र 07/09/2002	मंगल 06/05/2014	राहु 24/03/2029	गुरु 05/06/2037	शनि 04/09/2046
मंगल 04/02/2003	राहु 05/05/2017	गुरु 10/01/2030	शनि 04/01/2039	बुध 02/09/2047
राहु 22/02/2004	गुरु 04/01/2020	शनि 23/12/2030	बुध 05/06/2040	केतु 29/01/2048
गुरु 28/01/2005	शनि 06/03/2023	बुध 29/10/2031	केतु 04/01/2041	शुक्र 30/03/2049
शनि 09/03/2006	बुध 04/01/2026	केतु 05/03/2032	शुक्र 04/09/2042	सूर्य 05/08/2049
बुध 06/03/2007	केतु 06/03/2027	शुक्र 06/03/2033	सूर्य 06/03/2043	चंद्र 06/03/2050

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
06/03/2050	05/03/2068	05/03/2084	07/03/2103	06/03/2120
05/03/2068	05/03/2084	07/03/2103	06/03/2120	00/00/0000
राहु 16/11/2052	गुरु 23/04/2070	शनि 09/03/2087	बुध 03/08/2105	केतु 02/08/2120
गुरु 12/04/2055	शनि 04/11/2072	बुध 16/11/2089	केतु 31/07/2106	शुक्र 18/02/2121
शनि 16/02/2058	बुध 10/02/2075	केतु 26/12/2090	शुक्र 31/05/2109	00/00/0000
बुध 04/09/2060	केतु 17/01/2076	शुक्र 25/02/2094	सूर्य 06/04/2110	00/00/0000
केतु 22/09/2061	शुक्र 17/09/2078	सूर्य 07/02/2095	चंद्र 06/09/2111	00/00/0000
शुक्र 22/09/2064	सूर्य 06/07/2079	चंद्र 07/09/2096	मंगल 02/09/2112	00/00/0000
सूर्य 17/08/2065	चंद्र 04/11/2080	मंगल 17/10/2097	राहु 22/03/2115	00/00/0000
चंद्र 16/02/2067	मंगल 11/10/2081	राहु 24/08/2100	गुरु 27/06/2117	00/00/0000
मंगल 05/03/2068	राहु 05/03/2084	गुरु 07/03/2103	शनि 06/03/2120	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 0 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 06/03/2023 04/01/2026	शुक्र - केतु 04/01/2026 06/03/2027	सूर्य - सूर्य 06/03/2027 24/06/2027	सूर्य - चंद्र 24/06/2027 23/12/2027	सूर्य - मंगल 23/12/2027 29/04/2028
बुध 31/07/2023 केतु 29/09/2023 शुक्र 19/03/2024 सूर्य 10/05/2024 चंद्र 04/08/2024 मंगल 04/10/2024 राहु 08/03/2025 गुरु 24/07/2025 शनि 04/01/2026	केतु 29/01/2026 शुक्र 10/04/2026 सूर्य 01/05/2026 चंद्र 06/06/2026 मंगल 30/06/2026 राहु 02/09/2026 गुरु 29/10/2026 शनि 05/01/2027 बुध 06/03/2027	सूर्य 12/03/2027 चंद्र 21/03/2027 मंगल 27/03/2027 राहु 12/04/2027 गुरु 27/04/2027 शनि 14/05/2027 बुध 30/05/2027 केतु 05/06/2027 शुक्र 24/06/2027	चंद्र 09/07/2027 मंगल 19/07/2027 राहु 16/08/2027 गुरु 09/09/2027 शनि 08/10/2027 बुध 03/11/2027 केतु 14/11/2027 शुक्र 14/12/2027 सूर्य 23/12/2027	मंगल 31/12/2027 राहु 19/01/2028 गुरु 05/02/2028 शनि 25/02/2028 बुध 14/03/2028 केतु 22/03/2028 शुक्र 12/04/2028 सूर्य 18/04/2028 चंद्र 29/04/2028
सूर्य - राहु 29/04/2028 24/03/2029	सूर्य - गुरु 24/03/2029 10/01/2030	सूर्य - शनि 10/01/2030 23/12/2030	सूर्य - बुध 23/12/2030 29/10/2031	सूर्य - केतु 29/10/2031 05/03/2032
राहु 17/06/2028 गुरु 31/07/2028 शनि 21/09/2028 बुध 07/11/2028 केतु 26/11/2028 शुक्र 20/01/2029 सूर्य 05/02/2029 चंद्र 05/03/2029 मंगल 24/03/2029	गुरु 02/05/2029 शनि 17/06/2029 बुध 28/07/2029 केतु 14/08/2029 शुक्र 02/10/2029 सूर्य 17/10/2029 चंद्र 10/11/2029 मंगल 27/11/2029 राहु 10/01/2030	शनि 06/03/2030 बुध 24/04/2030 केतु 14/05/2030 शुक्र 11/07/2030 सूर्य 29/07/2030 चंद्र 26/08/2030 मंगल 16/09/2030 राहु 07/11/2030 गुरु 23/12/2030	बुध 05/02/2031 केतु 23/02/2031 शुक्र 16/04/2031 सूर्य 01/05/2031 चंद्र 27/05/2031 मंगल 14/06/2031 राहु 31/07/2031 गुरु 10/09/2031 शनि 29/10/2031	केतु 06/11/2031 शुक्र 27/11/2031 सूर्य 04/12/2031 चंद्र 14/12/2031 मंगल 22/12/2031 राहु 10/01/2032 गुरु 27/01/2032 शनि 16/02/2032 बुध 05/03/2032
सूर्य - शुक्र 05/03/2032 06/03/2033	चंद्र - चंद्र 06/03/2033 04/01/2034	चंद्र - मंगल 04/01/2034 05/08/2034	चंद्र - राहु 05/08/2034 04/02/2036	चंद्र - गुरु 04/02/2036 05/06/2037
शुक्र 05/05/2032 सूर्य 23/05/2032 चंद्र 23/06/2032 मंगल 14/07/2032 राहु 07/09/2032 गुरु 26/10/2032 शनि 22/12/2032 बुध 12/02/2033 केतु 06/03/2033	चंद्र 31/03/2033 मंगल 18/04/2033 राहु 02/06/2033 गुरु 13/07/2033 शनि 30/08/2033 बुध 12/10/2033 केतु 30/10/2033 शुक्र 20/12/2033 सूर्य 04/01/2034	मंगल 16/01/2034 राहु 17/02/2034 गुरु 18/03/2034 शनि 20/04/2034 बुध 21/05/2034 केतु 02/06/2034 शुक्र 08/07/2034 सूर्य 18/07/2034 चंद्र 05/08/2034	राहु 26/10/2034 गुरु 07/01/2035 शनि 04/04/2035 बुध 21/06/2035 केतु 23/07/2035 शुक्र 22/10/2035 सूर्य 18/11/2035 चंद्र 03/01/2036 मंगल 04/02/2036	गुरु 09/04/2036 शनि 25/06/2036 बुध 02/09/2036 केतु 30/09/2036 शुक्र 20/12/2036 सूर्य 14/01/2037 चंद्र 23/02/2037 मंगल 24/03/2037 राहु 05/06/2037

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

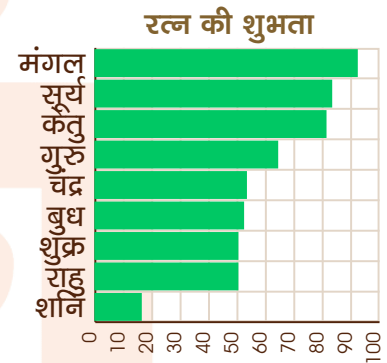
Vibhaasharma.av@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	92%	सुख, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	83%	दम्पति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	81%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	64%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	53%	सन्तति सुख, कम खर्च
पन्ना	बुध	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	50%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
नीलम	शनि	16%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	06/03/2007	70%	31%	98%	52%	64%	56%	0%	25%	94%
शुक्र	06/03/2027	70%	31%	92%	58%	64%	62%	28%	56%	88%
सूर्य	06/03/2033	95%	59%	98%	52%	70%	25%	0%	25%	69%
चंद्र	06/03/2043	89%	66%	92%	58%	64%	50%	16%	25%	69%
मंगल	06/03/2050	89%	59%	100%	28%	70%	50%	16%	25%	88%
राहु	05/03/2068	70%	31%	79%	52%	64%	56%	28%	62%	69%
गुरु	05/03/2084	89%	59%	98%	28%	77%	25%	16%	50%	81%
शनि	07/03/2103	70%	31%	79%	58%	64%	56%	41%	56%	69%
बुध	06/03/2120	89%	31%	92%	64%	64%	56%	16%	50%	81%

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

व्यय
सुख हानि
सन्तति
शत्रु व रोग मुक्ति
दुर्घटना से बचाव

Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल जन्म कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः आप मांगलिक दोष से युक्त हैं परन्तु शास्त्र के अनुसार आपके मंगली दोष का प्रभाव खत्म हो जाता है। अतः जीवन में आपको इसके अशुभ फल की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। जिसके फलस्वरूप आप जीवन में समस्त वैभव एवं सुखैश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आप शरीर से प्रायः स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहेंगी। मांगलिक योग के प्रभाव से विवाह में विलम्ब हो सकता है लेकिन इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी। आपका विवाह शान्ति पूर्वक सम्पन्न हो जाएगा तथा किसी भी प्रकार से इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करेंगी। विवाह के पश्चात् यदा कदा आपके पति का स्वास्थ्य अल्प मात्रा में प्रभावित होगा लेकिन किसी भी प्रकार से अशुभ फलों की प्राप्ति नहीं होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी भी बनेंगी जिससे आपका सांसारिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से यदा कदा पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा न ही इससे आपका दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। चतुर्थ भाव से मंगल की दशम भाव पर दृष्टि आपके कार्यक्षेत्र को सर्वदा उन्नति प्रदान करने वाली होगी। अतः आप कोई उच्च पदाधिकारी या किसी सम्मानित पद को प्राप्त करके समाज में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आय साधनों में वृद्धि कारक होगी तथा स्व बुद्धि एवं परिश्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस प्रकार मंगल के शुभ प्रभाव से आप हमेशा प्रसन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखमय बनाने के लिए आप किसी गैरमांगलिक पुरुष या ऐसे मंगली पुरुष से विवाह कर सकती हैं। जिसके मंगल का दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप कुंडली मिलान के समय इन बातों का ध्यान रखेंगी तो आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सौभाग्य एवं सुखैश्वर्य से सम्पन्न तथा धन धान्य से युक्त रहेगा तथा जीवन के समस्त सुखों का आनन्द प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जिस युवक की जन्म कुण्डली में मंगल समान भाव अर्थात् चतुर्थ भाव में ही स्थित हो उससे विवाह नहीं करना चाहिए क्यों कि समान भाव में स्थित मंगल शुभ की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा जिससे दाम्पत्य जीवन में बाधा उत्पन्न होगी। अन्य भावों में स्थित मंगल यदि पूर्ण रूप से दोष मुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। ऐसा होने से आप हमेशा प्रसन्न रहेंगी तथा परस्पर संबंधों में भी पूर्ण घनिष्टता रहेगी। अतः सुखी एवं शान्त दाम्पत्य जीवन के लिए सावधानी पूर्वक विचार करके अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शक्ति का प्रायः ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की सम्भावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाईयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा झंझट हो जाता है। बड़े भाई से भी किसी समय थोड़ा बहुत विवाद हो जाता है।

इस योग के कारण जातक अपने स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है पर कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति किसी समय चिन्तातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या थोड़ा बहुत संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सर्वत्र लाभ दिखालाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हस्तगत नहीं होता। सन्तान पक्ष से थोड़ा बहुत परेशानी घेरे रहती है तथा जातक को अपने शरीर में भी रोग व्याधि लग जाती है और उससे कष्ट उठाना पड़ता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है तथा जीवन का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या

पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(06/03/2007 - 06/03/2027)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 06/03/2007 को आरंभ होकर 06/03/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात् अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते हैं अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(06/03/2023 - 04/01/2026)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/03/2007 को प्रारंभ हुई थी और वद 06/03/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 06/03/2023 जो आपके लिए 04/01/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठ भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

छठे भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है जिससे शत्रुता बढ़ेगी। झगड़ा लू होने के बावजूद समाज में सम्मान बढ़ेगा। अधिक उत्तेजना से स्नायुरोग हो सकता है अतः वाणी मृदु बनायें। आलस्य के कारण पढ़ाई में बाधा आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - केतु
(04/01/2026 - 06/03/2027)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/03/2007 को प्रारंभ हुई थी और 06/03/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 04/01/2026 को प्रारंभ होकर 06/03/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको भावनात्मक कष्ट हो सकते हैं। आप अत्याधिक संवेदनशील हो सकते हैं। सगे-संबंधियों से आपका व्यवहार असामान्य रह सकता है। आप छोटी-छोटी बातों का बुरा मान सकते हैं। भावनाओं में बहकर आप गलत कदम उठाएंगे और बाद में पछताएंगे। कोई भी काम जल्दबाजी में न करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की उपासना करें और मंगलवार, शनिवार को

महादशा :- सूर्य
(06/03/2027 - 06/03/2033)

सूर्य की महादशा 06/03/2027 आरम्भ हो रही है और 6 वर्षों की अवधि के बाद 06/03/2033 समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य सप्तम भाव में अवस्थित है। सूर्य शारीरिक शक्ति, उच्च प्रतिष्ठा, नेता, प्रशासन, राज्य आदि का प्रतिनिधित्व करता है जबकि सप्तम भाव जीवनसाथी, प्रतिष्ठा की प्राप्ति और व्यवसाय में साझेदारी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आपको मान-सम्मान मिलेगा और आप पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक संरचना उत्तम है। आपकी जीवन-शक्ति में वृद्धि होगी।

आप में सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति और उत्साह विद्यमान हैं। आप स्वास्थ्य लाभ करेंगे। उत्तम स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिये सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और प्रदाह से पीड़ित हो सकते हैं और यदि असावधान रहे तो हृदय की पीड़ा भी हो सकती है।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं और पर्याप्त संसाधनयुक्त हैं। आप स्वभाव से उदार हैं और आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन है। आपको आपके जीवनसाथी से धन की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति अथवा माता से लाभ मिल सकता है। साझेदारी अथवा विदेश से व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। इस दशा में आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आपको शक्ति, प्रभुत्व, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और इस दशा में संगठनों तथा संस्थाओं के प्रधान हो सकते हैं। आप बड़े निगमों या संगठनों के प्रबन्धक के पद के लिये सर्वाधिक उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। रत्नों, पत्थरों, संगमरमर, अनाज और उपकरण आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। पेशेवर खिलाड़ियों को उत्तम और भाग्यशाली अवसर प्राप्त हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि के साथ पदोन्नति होगी, डच्चाधिकारियों अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य-क्षेत्र में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। व्यवसायियों और व्यापारियों के लिये यह दशा भाग्यशाली होगी। प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, उच्च पद प्राप्ति, यश और कार्यों में सफलता के संकेत भी मिलते हैं। आय तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

परिवार (कुटुम्ब) :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिए। अन्यथा आपके

वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपकी माता को सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी और उनकी अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता की मनोकामनाएं पूरी होंगी और उनकी आय में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे तथा निवेश में लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को भाग्यशाली अवसर की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी वेदान्त दर्शन, प्राचीन वेदों तथा योग में रुचि होगी।



Vibhaa Sharma (Astrology And Vastu Solutions)

D-43, Sector-2, Devendra Nagar, Raipur, Chhattisgarh.

8109680205

Vibhaasharma.av@gmail.com

अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(06/03/2027 - 24/06/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/03/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 24/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप में शक्ति और ऊर्जा भरपूर रहेगी। किसी भी स्थिति से निबटने के लिए आत्मविश्वास रहेगा। प्रसिद्ध संगठनों के साथ आपकी भागीदारी होगी। विवाह, अनुबंध या भागीदारी से धन प्राप्त हो सकता है। जनमानस से संबंध मधुर रहेंगे। इस अवधि में किसी महत्वपूर्ण समझौते या ठेके पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। राजनीति में सफलता मिलेगी, विदेश यात्रा भी संभव है।

आपके पिता की आय में वृद्धि संभव है। उनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता के सुख में वृद्धि होगी। संतान की क्रियाशीलता बढ़ेगी। जीवनसाथी सब फैसले स्वयं करना पसंद करेंगे। सेवारत जातकों के धन और आय में वृद्धि होगी। उद्यमियों, व्यापारियों, सलाहकारों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा पर अत्यधिक परिश्रम से बचना चाहिए। चिड़चिड़ेपन और आवेग से बचें। उच्च रक्तचाप या संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं। शीतल पदार्थ जैसे केसर, मुलैठी आदि से औषधि स्नान करें और ध्यान का अभ्यास करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(24/06/2027 - 23/12/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 06/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 23/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मस्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपके धन और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। आप सुखकारी गतिविधियों और शुभ उत्सवों में भाग लेंगे। धन, अधिकार और सत्ता प्राप्त करेंगे। सट्टेबाजी से आय में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। जीवनसाथी के भाग्य में वृद्धि होगी। आपको उन्नति, प्रसिद्धि, पक्की दोस्ती, धनलाभ आदि प्राप्त होंगे।

आपके बच्चों की शिक्षा, दीक्षा, जीवन आदि उत्तम रहेंगे। संतान का जन्म हो सकता है। आपके बड़े भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। ललित कलाओं, नाटक आदि में आपकी रुचि रहेगी। समाज में सफलता मिलेगी। पिता का भाग्य उत्तम रहेगा। माता के संचित धन में वृद्धि होगी। शत्रुओं की आपको बदनाम करने की कोशिशें विफल रहेंगी। मामापक्ष के लोगों का भाग्य मंद हो सकता है। सेवारत जातकों का भाग्यवर्धक तबादला हो सकता है। शिक्षारत जातकों के लिए यह स्वर्णिम समय है। आप तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर मामूली शिकायतों, पेट के रोग आदि से सावधानी रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सोमवार को उपवास रखें।

अंतर्दशा :- सूर्य - मंगल
(23/12/2027 - 29/04/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 06/03/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 29/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप नयी जायदाद खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद से आय में वृद्धि हो सकती है। आपको बहुत सी परियोजनाओं को कार्यरूप देने की जिम्मेदारी मिल सकती है। वैवाहिक जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। व्यापार के साझेदार परेशान कर सकते हैं। धैर्य और नीति की आवश्यकता है। जीवनसाथी या व्यापार में भागीदार की सक्रियता बढ़ सकती है। सेवारत व्यक्तियों के लिए लाभ का समय रहेगा। प्रतिद्वंद्वी और विरोधी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। व्यापारियों को परिश्रम से बहुत लाभ होगा।

माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उन्हें जरूरत से अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिए। पिता को भी स्वास्थ्य के प्रति विशेषकर छोटी-मोटी चोटों के बारे में सावधान रहना चाहिए। आपकी संतान शिक्षा की जगह अन्य गतिविधियों में अधिक ध्यान दे सकती है। छोटे भाई-बहन अच्छा धनार्जन करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

आपको छाती के रोगों, हृदयव्याधियों, उच्च रक्तचाप, ज्वर आदि के प्रति सावधानी रखनी चाहिए। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(29/04/2028 - 24/03/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 29/04/2028 को प्रारंभ होकर 24/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको आकांक्षाओं की पूर्ति में विभिन्न व्यक्तियों से सहायता प्राप्त होगी। विदेश के संपर्कों से लाभ होगा। आपको धन, सुख-सुविधाएं और आराम नसीब होंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चाधिकारियों से सम्मान मिलेगा।

जीवनसाथी को धन मिलेगा। आपके पिता को सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मठता से प्रयास करने होंगे। माता को स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान देना चाहिए। भाई-बहन सौभाग्यशाली रहेंगे। उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त होगी। उनका विवाह हो सकता है। आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। संपर्क बढ़ाने के लिए समय उनके लिए उत्तम है।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे, सब कुछ ठीक ढंग से चलेगा। परामर्शदाताओं के जमा धन में वृद्धि होगी। व्यापारियों की व्यस्तता बढ़ेगी।

शरीर के निचले भागों और बायें कान की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए नीले वस्त्र और सतनजे का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(24/03/2029 - 10/01/2030)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 24/03/2029 को प्रारंभ होकर 10/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपके कार्य-व्यवसाय, समाज और साख में पर्याप्त उन्नति होगी। विज्ञान, साहित्य या यात्रा द्वारा लाभ हो सकता है। विदेश में सफलता मिल सकती है। वाहन सुख रहेगा, माता-पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर जीत होगी और कर्ज से छुटकारा होगा। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी, कार्यक्षेत्र में साख बढ़ेगी। आपके पिता को अचानक अप्रत्याशित धनलाभ होगा। ग्रेच्युटी, सेवानिवृत्ति आदि से धन मिल सकता है। माता के धन में वृद्धि, साझेदार से लाभ और आकांक्षाओं की पूर्ति का योग है। आपके भाई-बहन धन कमाएंगे, छोटी यात्राएं होंगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपकी संतान स्पर्धा में सफल रहेगी और अपनी पहचान बनाएगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परामर्शदाताओं के लिए समय बहुत शुभ है। व्यापारी धन कमाएंगे और तरक्की करेंगे।

शरीर के नीचे के अंगों (विशेषकर घुटनों) के रोग और मोटापे से सावधान रहें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः